11.07.2020
B.A. I (Philosophy) Hons
1st Paper

# बौद्धदर्शन का द्वितीय आर्यसत्य
(Second noble truth of Buddhism)

बुद्ध के द्वितीय आर्यसत्य में दुःख की उत्पत्ति अर्थात दुःख के कारण पर विचार किया गया है। प्रत्येक घटना का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। दुःख भी एक घटना है तो अवश्य ही इसका भी कोई न कोई कारण अवश्य होगा। लगभग सभी भारतीय दार्शनिकों तथा विचारकों ने अज्ञान अथवा अविद्या को दुःख का कारण माना है। बौद्धदर्शन में दुःख की उत्पत्ति का सिद्धान्त बौद्ध के "प्रतीत्यसमुत्पाद" अर्थात कार्य-कारण सिद्धान्त पर आधारित है। प्रतीत्यसमुत्पाद दो शब्दों- "प्रतीत्य" तथा "समुत्पाद" के योग से बना है। प्रतीत्य का अर्थ है किसी वस्तु के उपस्थित होने पर तथा समुत्पाद का अर्थ है किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति। इस प्रकार प्रतीत्यसमुत्पाद का शाब्दिक अर्थ है- एक वस्तु के उपस्थित होने पर किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति। यह सिद्धान्त मानता है कि कोई भी वस्तु न तो शाश्वत होती है तथा न तो पूर्णतः नश्वर ही होता है। बौद्ध मतानुसार प्रत्येक वस्तु स्वयं को पीछे कुछ न कुछ अवश्य छोड़ जाती है। पूर्णरूपेण किसी वस्तु का नाश नहीं होता। 'क' 'ख' को 'ख' 'ग' को तथा 'ग' 'घ' को उत्पन्न करती है। इस तरह एक कार्य-कारण शृंखला बन कर तैयार होती है। प्रतीत्यसमुत्पाद को पंचकारिका द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। यहाँ यदि 'क' को कारण तथा 'ख' को कार्य माना जाय तो पंचकारिका के ये पाँच सोपान होंगे- (1) हम देखते हैं कि यदि 'क' नहीं है तो 'ख' भी नहीं है। (2) यदि 'क' का प्रत्यक्ष होता है तो (3) 'ख' का भी प्रत्यक्ष होता है। (4) पुनः यदि 'क' अनुपस्थित होता है तो (5) 'ख' भी अनुपस्थित हो जाता है।

बौद्धदर्शन के मतानुसार प्रतीत्यसमुत्पाद को मान लेने पर दुःख के कारण को मानना भी आवश्यक तथा अनिवार्य हो जाता है। बौद्धदर्शन में दुःख के कारण के रूप में बारह कड़ियों (Twelve links of suffering) को स्वीकार किया गया है। इसे 'द्वादश-निदान' भी कहा गया है। इन कड़ियों के दो छोर हैं एक छोर दुःख है तथा दूसरा छोर अविद्या अथवा अज्ञान है। यहाँ इन दोनों का प्रस्थान का

सकते हैं अर्थात् कारण से कार्य की तरफ तथा कार्य से कारण की तरफ भी प्रस्थान किया जा सकता है। दुःख से प्रस्थान करने पर अविद्या तथा अविद्या से प्रस्थान करने पर दुःख तक पहुँचते हैं।

कारण से कार्य की तरफ प्रस्थान → बौद्ध दर्शन में दुःख का मूल कारण अविद्या है। अविद्या का अर्थ है अज्ञान: वास्तविक-अवास्तविक, जीव-अजीव के अन्तर तथा संबंध को न समझना। अविद्या से बुरी प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं जिन्हें संस्कार कहा जाता है। पूर्व जन्मों के सभी कर्मों के प्रभाव से संस्कार बनता है। संस्कार के कारण एक प्रारंभिक चेतना जगती है जिसे विज्ञान कहा जाता है। विज्ञान के कारण गर्भ में शरीर बनता है जिसे नामरूप कहते हैं। शरीर बनने पर उसमें छः इन्द्रियाँ भी होती हैं जिसे षडायतन कहा जाता है। इन्द्रियाँ रहेंगी तो इन्द्रिय तथा वस्तु में सम्पर्क भी होगा जिसे स्पर्श कहा जाता है। जब इन्द्रिय से वस्तु का सम्पर्क होगा तो कुछ इन्द्रिय-सुख का अनुभव भी मिलेगा जिसे वेदना कहते हैं। इन्द्रिय सुख से उपभोग की इच्छा जगती है जिसे तृष्णा कहते हैं। उपभोग की इच्छा अर्थात् वस्तुओं से चिपके रहने की प्रवृत्ति वस्तुओं के प्रति आसक्ति उत्पन्न करती है जिसे उपादान कहते हैं। उपादान से जन्म लेने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है जिसे भव कहते हैं। और तब जाति भी होगी तथा जन्म लेने से दुःख अर्थात् जरामरण भी होगा। इस प्रकार दुःख का कारण बारह कड़ियों वाला यह चक्र है। इसे द्वादश-निदान, भव-चक्र, संसार-चक्र, धर्म-चक्र आदि भी कहते हैं। इसमें दुःख तथा अविद्या सदैव साथ रहते हैं।

द्वादश निदान भूत, वर्तमान और भविष्यत जीवनों में व्याप्त हैं। वर्तमान जीवन का कारण अतीत जीवन है और वर्तमान जीवन का प्रभाव भविष्य जीवन पर पड़ता है। सम्पूर्ण द्वादशनिदान को हम भूत, वर्तमान तथा भविष्य जीवन अर्थात् तीनों कालों में विभक्त कर सकते हैं —

(1) अतीत काल — अविद्या एवं संस्कार।

(2) वर्तमान काल — विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान एवं भव।

(3) भविष्य काल — जाति एवं जरा-मरण।
कार्य से कारण की तरफ प्रस्थान → यदि दुःख को कार्य माना जाय तो इसके कारण की बारह कड़ियाँ निम्नलिखित हैं —
(i) जरा-मरण
(ii) जाति
(iii) भव
(iv) उपादान
(v) तृष्णा
(vi) वेदना
(vii) स्पर्श
(viii) षड़ायतन
(ix) नाम-रूप
(x) विज्ञान
(xi) संस्कार
(xii) अज्ञान या अविद्या।

प्रतीत्यसमुत्पाद के विरुद्ध आलोचनाएँ →
बौद्धों के प्रतीत्यसमुत्पाद को अकाट्य मौलिक नहीं माना जा सकता है क्योंकि यह उपनिषद के ब्रह्मचक्र की नकल है। फिर बौद्ध दर्शन में दुःखों के कारणों की खोज करने के क्रम में अविद्या पर आकर रुक जाते हैं। यदि सभी घटना का कारण होता है तो अविद्या का भी कोई कारण अवश्य होगा। बौद्ध विचारक इसका उत्तर देते हुए कहते हैं कि दुःख से प्रस्थान कर अविद्या तक तथा अविद्या से प्रस्थान कर दुःख तक पहुँचने से चक्र पूरा हो जाता है। दुःख तथा अविद्या सदैव साथ रहते हैं अतः यह बताना कठिन है कि कौन पूर्ववर्ती है तथा कौन अनुवर्ती।
प्रतीत्यसमुत्पाद के परिणाम →
प्रतीत्यसमुत्पाद से क्षणिकवाद अथवा अनित्यवाद का उदय होता है। इस सिद्धान्त के

अनुसार प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई कारण अवश्य होता है तथा कारण के नष्ट हो जाने पर कार्य भी नष्ट हो जाता है। प्रवृत्ति के परिवर्तनशील होने के कारण कोई भी वस्तु नित्य अथवा शाश्वत नहीं होती। उक्त नियम में प्रत्येक वस्तु अनित्य, क्षणिक तथा अस्थायी है। इस सिद्धान्त से अनात्मवाद को भी बल प्राप्त होता है। यदि इस संसार अथवा जगत की सभी वस्तुएँ क्षणिक, परिवर्तनशील तथा अनित्य हैं तब तो आत्मा भी अनित्य है। इसे अनित्यवाद भी कहा जा सकता है।

डा० सन्तोष कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र,
अनजबित सिंह महाविद्यालय,
विक्रमगंज (रोहतास)।
दिनांक : 11.07.2020